आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:27-12-14

हम बच्चों को कर्म, अकर्म और विकर्म की गति का सारा ज्ञान देकर, हमें श्रेष्ठ कर्म करना सिखलाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - सारा मदार कर्मों पर है, सदा ध्यान रहे कि माया के वशीभूत कोई उलटा कर्म न हो जिसकी सजा खानी पड़े.

बाबा ने हमें कर्मों का ज्ञान देते हुए समझाया है कि कैसे हम आत्मा ये कर्म, अकर्म और विकर्म के चक्र में आते है. हम आत्मा ये सतयुग के आरंभ से कलियुग अन्त तक यहाँ देही-अभिमानी होकर पार्ट बजाते है. सतयुग और त्रेतायुग में हमें जो भी पार्ट मिलता है वह अभी संगमयुग की प्रालब्ध के रुप में मिलता है. इसलिए वहाँ हम आत्मा ये जो भी कर्म करते है उसका कोई हिसाब-किताब (खाता) नहीं बनता, इसलिए वहाँ के हमारे सब कर्म, अकर्म बन जाते है. फिर द्वापर से माया-रावण का राज्य शुरू होता है तो हम आत्मा ये देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाते है. द्वापर से हम जो भी कर्म करते है सब विकर्म ही बनते है क्योंकि सब अच्छे-बुरे कर्मों का खाता जरूर बनता है, जिसे आत्मा को कई जन्मो में कलियुग के अन्त तक चूकतू करना पड़ता है. फिर कलियुग के अन्त में परमपिता-परमात्मा का अवतरण होता है और वह हमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र रुपी ड्रामा के आदि-मध्य-अंत का सारा ज्ञान देते है और हमें श्रेष्ठ कर्म (पुण्य कर्म) करना सिखलाते हैं. श्रेष्ठ कर्म कहा जाता है जब बाबा कि याद में रहकर कोई भी यज्ञ सेवा, ज्ञान देने की सेवा या कर्मणा सेवा करते है तो उसका भाग्य पदम-गुणा बनता है. यही श्रेष्ठ या पुण्य कर्म कहा जाता है, जिसे हम आत्मा ये आधा-कल्प के लिए अपना भाग्य बनाते है.

हम ब्राह्मण आत्माओं का पदम-गुणा भाग्य है कि हमें श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान, स्वयं परमात्मा आकर देते है. लेकिन बाबा हमें खबरदार भी करते है कि इस पवित्र ब्राह्मण जीवन में अगर तुमसे कोई भी भूल हो जाती है तो उसे बाप को जरूर बता देना है नहीं तो उसका सो गुणा दंड भोगना पड़ता है. इसलिए सत बाप से (शिव ही सत्य है, सत्य ही शिव है) सदा के लिए सच्चा रहना ही है. कोई भी गलती बाप से छिपानी नहीं है.

आज की मुरली से बाप की याद पक्की करने के लिए कहे गये महा-वाक्यों ----

- बाबा कहते है मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों को यह पक्का निश्चय है की इस पुरानी दुनिया में हम अभी थोड़े दिन के मुसाफ़िर हैं इन आंखों से जो भी देखते है वह सब कुछ विनाश होने

वाला है. हमारी आत्मा तो अविनाशी है. हम आत्मा ने ८४ जन्म लिए हैं. अभी मेरा बाबा आया है मुझे अपने साथ घर ले जाने.

- बाबा कहते है मीठे बच्चों को यह भी मालूम है की बाप आते है नई दुनिया बनाने. पुरानी दुनिया तो अब पुरी होती है. बच्चों की बुद्धि में है कि कैसे यह दुनिया नई से पुरानी और फिर पुरानी से नई बनती हैं. बच्चों ने अनेको बार यह चक्र लगाया है. अभी तुम जानते हो कि यह चक्र अब पुरा होता है. नई दुनिया में हम थोड़े ही देवतायें होंगे. मनुष्य नहीं होंगे. सारा मदार है कर्मों पर.

- बाबा कहते है अभी तो यह है पुरुषोत्तम संगमयुग जबकि तुम बेहद के बाप को याद कर पतित छी-छी से गुल-गुल, कांटों से फूल बनते हो. तुम्हारी आत्मा ने बाप को पुकारा हैं कि पतितों को पावन बनाने वाले आओ. तुम जानते हो संगम पर ही बाबा का पार्ट चलता है. वही क्रियेटर, डायरेक्टर भी है.

- बाबा कहते है मुझे अपना शरीर नहीं है. मैं माता के गर्भ से जन्म नहीं लेता. मैं तो यह ब्रह्मा का शरीर टैम्प्रेरी लोन पर लेता हूँ, तुम्हें राजयोग सिखलाने. यह राजयोग सीखकर तुम ही मनुष्य से देवता बनते हो. तुम ही जानते हो शिव-बाबा को न तो देवता, न तो मनुष्य कहा जाता.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चों को अथाह खुशी है कि अभी हमने ८४ का चक्र पूरा किया है. बाबा ने खुद हमें बताया है कि यह तुम्हारा बहुत जन्मो के अन्त का जन्म है. तुम्हें अभी नई दुनिया में जाना है. बाबा हमारे लिए नई दुनिया स्वर्ग बना रहा है. बाप की याद से ही तुम वापस गुल-गुल बनते हो.

- बाबा कहते है तुम जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग गीता का एपीसोड है, जिसमें पवित्रता मुख्य है. बाप ही तुम्हें कहते है कि देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल एक मुझ बाप को याद करो तो माया के पाप कर्म भस्म हो जायेंगे.

- बाबा कहते हैं अभी ही मैं तुम्हारी सेवा में उपस्थित होता हूँ. तुमने ही मांगनी की है कि आकर हम पतितों को पावन बनाओ. तुम्हारे कहने से मैं आया हूँ. तुम्हें बहुत सहज रास्ता बताता हूँ सिर्फ मनमनाभव. भगवानुवाच है ना. तो तुम मीठे-मीठे बच्चों को हड्डी (जिगरी) खुशी रहती हैं.

ॐ शांति. Feedback/Queries/Suggestions to Atma bhai on a.brahmin.soul@gmail.com .